Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

हिंदी और उर्दू उपन्यासों में चित्रित समाज

(अल्लाह मियाँ का कारखाना और आपका बंटी के विशेष संदर्भ में)

मो.वसीम
शोधार्थी, हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।

Article Info

Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6

Page Number : 50-53

Article History
Received : 01 Dec 2023
Published : 12 Dec 2023

सारांश:- भारतीय उपमहाद्वीप की दो प्रमुख भाषाओं हिंदी और उर्दू का साहित्य एक ही सांस्कृतिक विरासत अपने भीतर समेटे हुए हैं । दोनों भाषाओं के साहित्य को भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिवेश ने समान रूप से प्रभावित किया है । इन दोनों भाषाओं के साहित्य में विषय भाव और संवेदना की दृष्टि से अद्भुत साम्य देखने को मिलता है । इन दोनों भाषा के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन इस भारतीय महाद्वीप की साझा संस्कृति और संवेदना को समझने की एक नई दृष्टि देता है और अवबोध के नए गवाक्ष खोलता है । तुलनात्मक साहित्य द्वारा ज्ञान का विस्तार तो होता ही है साहित्य में चित्रित दोनों भाषाओं के समाज का यथार्थ रूप में अंकन होता है ।

मूलशब्द:- बाल मनोविज्ञान, शिक्षा और धर्म, संवेदना, बाह्यआडंबर, समाज।

'अल्लाह मियाँ का कारखाना' उपन्यास मोहसिन खान द्वारा रचित है, जो मूल रूप से उर्दू में लिखा गया । जिसका हिंदी भाषा में अनुवाद सईद अहमद ने किया । यह उपन्यास समकालीन समय में लिखे जा रहे महत्वपूर्ण उपन्यासों में से एक है । इसमें एक बच्चे के माध्यम से मुस्लिम समाज के वातावरण, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक और घरेलु जीवन की समस्याओं को सरल, सजीव और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है । ऐसा ही प्रभाव हिंदी में मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'आपका बंटी' उपन्यास की भाव भूमि स्पष्ट दिखाई देती है । विश्व के इस्लामिक देशों में बच्चों की परवरिश, स्वास्थ्य और जीवन को अल्लाह के नाम पर छोड़कर बच्चों का एक्सप्लौयटेशन (शोषण) हो रहा है, जिसे लेखक ने उपन्यास में यथार्थता और प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रण किया है । उपन्यास में जिन विषयों को उठाया गया है, वह समाज पर व्यंग्य करने वाले हैं । इस संबंध में मोहसिन खान (लेखक) ने एक साक्षात्कार में कहा है कि 'हमारे यहाँ कन्ट्रडिक्शन बहुत है । एक तरफ हम नमाज पढ़ते हैं दूसरी तरफ हम वे सब काम करते हैं जो सही नहीं है । खुदपसंदी बड़ी खतरनाक चीज है, एक आदमी कभी बड़ा दयालु और सबसे प्रेम करने वाला दिखता है, लेकिन अंदर से होता नहीं है, बस हमें दिखाई देता है । खुदपसंदी ने सब बिगाड़ कर रख दिया है ।' मनूष्य वहीं काम करता है जो उसके लिए सही और जिससे उसका फायदा होता हो । 'आपका बंटी' उपन्यास में माता-पिता के होते हुए भी बंटी अकेला जीवन जीने को अभिशप्त है । बंटी बेहद संवेदनशील है और जो संवाद उसके और उसके दोस्त टीटू के बीच होता है, वह हमें बच्चों की एक अलग ही दुनिया में ले जाता है । कभी-कभी

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भूलवश ये सोच बैठते हैं घर में बड़ों के बीच जो घटित होता है उसका बच्चों पर असर नहीं होता, लेकिन बच्चों पर इसका गहरा असर होता है जो उसे ताउम्र उनके दिलो दिमाग़ पर रहता है ।

अल्लाह मियाँ का कारखाना' उपन्यास में जिब्रान को केंद्र में रखकर बाल मनोविज्ञान पर लिखा गया है । यह एक अकेले बच्चे की कहानी है सब के होते हुए भी अकेला है, उसके पास जो भी होता हैं वह भी एक-एक करके उससे जुदा हो जाते हैं । जिब्रान के पिता एक छोटी-सी पर्चुने की दूकान खोल रखी थी, जिसमें घर का गुजारा न के बराबर हो पाता था । एक दिन पिता अपने परिवार को अल्लाह के भरोसे छोड़ बिना पर्याप्त भोजन का इंतजाम किये जमात में चले जाते हैं । अम्मी की तबियत का बिगड़ना और पिता का पुलिस द्वारा तबलीगी से जुड़े होने के शक पर हिरासत में ले लेना । पर्याप्त खाना और पुलिस का घर की तलाशी लेना और लगातार बदलता समाज का रवैया आखिर अम्मी की जान ले लेता है । जिब्रान और उसकी बहन(नुसरत) को चचा जान अपने घर ले जाते हैं, जहाँ जिब्रान एक अलग ही दुनिया देखता है । वह वहां पर अच्छा खाना चचा जान के साथ बेहद खुश था । खुशी ज्यादा दिन नहीं रही, चचा जान की लकवा मारने की वजह से कुछ समय बाद मृत्यु, कुछ समय बाद कितमीर (कुत्ते) की मृत्यु । जैसे ही उसके चहेते लोगों की मृत्यु ने उसके जीवन को नीरस कर दिया । चची जान द्वारा जिब्रान को घर से निकालना क्योंकि वह अख़बार में लड़कियों की गलत तस्वीर देखता है । आखिर में दर-दर भटकने के बाद हाफिज जी उसे रहने की जगह देते हैं । हाफ़ी जी भी उसे छोड़कर चले जाते हैं । उपन्यास के अंत में जिब्रान को तेज बुखार होना और अम्मी का उसके पास आना और कहना "जिब्रान तुमको बहुत तेज बुखार है । यहाँ अकेले हो । उठो,मेरे साथ चलो । वहां चचा और कितमीर तुम्हारा इन्तजार कर रहें हैं ।"[1] एक बच्चा जिसे जीवन में नई-नई चीजे देखना और करना अच्छा लगता है जिसे माता-पिता, हाफी जी इस्लामिक हवाला देकर रोका जाता है जैसे पतंग उडाना, पेंटिंग करना, किताब पढ़ना आदि । सिर्फ नुसरत और चचा जान ही उसे समझते थे । बाकि उपन्यास के पात्र जिब्रान चरित्र को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका और उसको परत-दर-परत खोलते दिखाई देते है । आपका बंटी की कथावस्तु के इर्द-गिर्द रहती है । सभी घटनाओं का प्रभाव प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बंटी पर पड़ता है । बंटी के माध्यम से ऐसे चरित्र की रचना की है जो अपने परिवेश में फालतू है । "शकुन-अजय के आपसी संबंधो में बंटी चाहे कितना ही फालतू और अवांछनीय हो गया हो, परंतु मेरी दृष्टि को सबसे अधिक उसी ने आकर्षित किया । वस्तुत: उपन्यासकार के लिए अप्रतिरोध चुनौती, सहानुभूति और मानवीय करुणा के केंद्र सिर्फ वे ही लोग हो पाते हैं, जो कहीं न कहीं फालतू हो गये हैं ।"[2] बंटी उपन्यास का मुख्य पात्र है । संपूर्ण घटनाक्रम उसी को केंद्र में रखकर समायोजित हुआ है ।

लेखक ने धर्म के नाम पर चलने वाले बाह्याडम्बर और पाखंड का वर्णन किया है । उपन्यास में समाज में प्रचलित कई घटनाओं का जिक्र है, जिससे हम समझ सकते हैं । लोगों का कहना था कि एक बुढा आदमी जब भी गाँव में आता है तभी कुछ न कुछ बुरी घटना घटित होती है । सभी गाँव के लोग घटना को हतप्रभ होकर देखते हैं । जिब्रान इस घटना के बारे में हाफी जी को बताता है तो वह कहते हैं "ऐसे हजारों पागल दुनिया में घूम रहे हैं । कोई लंगोटी वाला बाबा है । कोई गुदडी वाला बाबा है । कोई नंग-धडंग बाबा है । कम इल्म लोग उन्हें मजज़ूब समझ लेते हैं ।"[3] इस तरह की घटनाएँ सिर्फ इस्लाम में ही नहीं बल्कि हिन्दू और बाकी सभी धर्मों में देखने को मिलती है । अल्लाह के नाम पर व्यक्ति किसी भी कैसी भी प्रकार की घटना पर भरोसा कर लेता है, और किसी भी तरह का सवाल नहीं करना शुरू से ही बच्चे को सिखाया जाता है, जिसकी लेखक ने गहराई से पड़ताल की है । उपन्यास में कई मरतबा हलाल और हराम का जिक्र होता है । जैसे- नटों का तमाशा देखना आदि । आपका बंटी उपन्यास में बंटी संसार की प्रत्येक बात जान लेना चाहता है । मम्मी-पापा का क्या झगड़ा है? तलाक क्या होता है? मम्मी कभी-कभी रोती क्यों है?, पौधे कैसे बढ़ते है? आदि अनेक बातें उसके दिमाग में घूमती रहती हैं । जादू-तिलस्म और परियों की कहानियों सुन-सुनकर उसके बालपन में वैसी ही जादुई दुनिया पा लेने की

ललक उमड़ती रहती है–"कौन जाने इन पहाड़ियों की तलहटी में कोई साधू बैठा हो, जिसके पास जादू की खडाऊ हो, जादू का कमडल हो, एक बार जाकर जरूर देखना चाहिए ।"[4] समाज में व्याप्त आडंबर और कुरूतियों को दोनों उपन्यास में उजागर किया गया है ।

मुस्लिमों देशों में बच्चों को सिर्फ दुनियावी तालीम से महरूम रखकर दीन की तालीम दिलाने चाहते हैं । ऐसा ही कुछ जिब्रान और उसकी बहन नुसरत के साथ होता है, उन दोनों को जितना अच्छा अरबी पढ़ना लगता था उतना ही दुनियावी तालीम पढ़ने में अच्छा लगता था । जिब्रान के पिता उसे सिर्फ मौलवी यानी हाफी जी बनाना चाहते थे । यह जानते हुए भी कि इसमें इतना पैसा नहीं है और न ही पर्याप्त रूप से घर का खर्च चल सकता है । मालूम नहीं ये क्या फ़िक्र है और कौन–सा फ़लसफा है । बच्चों की फ़िक्र और सेहत अल्लाह के ऊपर छोड़ देना और खुद उसके लिए कुछ न करना । याद रहें अल्लाह भी उन्हीं की मदद करते हैं जिसमें किसी काम को करने की हिम्मत होती है ।

मदरसे में बाल मजदूरी पर भी लेखक ने ध्यान दिलाया है । हाफी जी बकरी को चारा खिला कर लाना, हाफी जी पैर दबाना, सर दबाना, और खाने की चीजें लाना आदि यह सब काम अल्लाह के नाम पर यानी अल्लाह को खुश करने का तरीका आदि है । आपका बंटी उपन्यास में बंटी को घर से दूर हॉस्टल में रहने के लिए भेज दिया जाता है ।

लेखक ने उपन्यास में दार्शनिक वाक्यों का प्रयोग किया है । जिन्हें पढ़कर हमें व्यक्ति की सांसों की डोर कितनी लम्बी है समझ में आ जाता है । "तुम अपनी पतंग को उतनी ही ऊंचाई तक ले जा सकते हो जितनी तुम्हारे पास डोर है ।' व्यक्ति अपना जीवन उतना ही जी पाता है, जितना समय मुकर्रर किया गया है । न समय से पहले और न समय के बाद । 'तुम रौशनी में जिस रास्ते से गुजर चुके हो उस पर अँधेरे में भी चलोगे तो ठोकर नहीं लगेगी ।"[5] व्यक्ति का व्यवहार ही उसके चरित्र का प्रमाण होता है, जैसा बोया जाएगा वैसा ही काटने को मिलेगा ।

आरंभ में जिब्रान अल्हड़, नटखट और शरारती बच्चा के रूप में दिखाई देता है, जो मार पड़ने पर भी ज़रा सी देर में ठीक हो जाता है, लेकिन जब जिंदगी की मार पड़ती है वह छोटा सा बच्चा तिलमिला जाता है । उसके जीवन में जितने लोग आये हैं वह सब उससे धीरे–धीरे करके अलग हो गए । जब कितमीर के मुँह पर मरने के बाद मक्खियाँ लग रही थी उसे महसूस होता है कि वह उसके कानों में चली गई है । जो कभी–कभी उसके कानों में शोर और भिनभिनाती रहती है । चचा जान और अम्मी से जिब्रान द्वारा बातें करना ऐसा लगता है जैसे वह मानसिक रूप से बीमार है । हाफी जी उसे बताते हैं कि उनकी रूह अल्लाह के पास पहुँच गई है, वह तुझसे बात नहीं कर सकते । मानसिक हालत होने के चलते वह समझ ही नहीं पाता । अंत में अम्मी के द्वारा जिब्रान को कहना उठो बेटा चचा और कितमीर तुम्हें याद कर रहें हैं, जिब्रान की मानसिक हालत की ओर संकेत करते है । मुसीबत पड़ने पर गैर तो छोड़ो अपने भी साथ छोड़ देते हैं । एक छोटे से परिवार के साथ रहते हुए अंततः अकेला बचता है । कहने भर को एक समाज के भीतर व्यक्ति अकेला नहीं रहता पर व्यक्ति सामाजिक रूप से चारों और से घिरे होने के बावजूद भी अकेला है । उपन्यास में भारतीय परिवेश में सामान्यतः न तो ऐसी पारिवारिक स्थितियां ही अधिसंख्या में मिलती और न ही बालक इतना संवेदनशील होता है जितना बंटी अपने परिवेश के प्रति है ।

लेखक ने बच्चे के मनोविज्ञान का सरलता और सजीवता के साथ वर्णन किया है उसे पढ़कर 'ईदगाह' कहानी के हामिद, 'शेखर एक जीवनी' के शेखर और 'आपका बंटी' उपन्यास में बंटी का चरित्र का चित्रण सामने आ जाता है । लेखकों ने कहानी और उपन्यास में बाल मनोविज्ञान का चित्रण ऐसा किया है कि आँखे नम हुए नहीं रहती । बंटी जिस प्रकार अम्मी और पापा के रहते हुए भी अकेला हो जाता है और अंततः उसे हॉस्टल भेज दिया जाता है । बंटी का ट्रेन में जाते हुए आँखों से आंसू का गिरना पाठक को भावविभोर कर देता है । उसी प्रकार अल्लाह मियां के कारखाना में जिब्रान जिंदगी में अकेले

जीवन जीता और समाज की बनी हुई परिपाटी में खुद को ढालने का भरसक प्रयास करना और आखिर में जिंदगी का हाथ से निकलते देखना । यहीं है आज का कटु सत्य जिसे नकारा नहीं जा सकता है ।

उपन्यास में किस्सागोई शैली का प्रयोग किया गया है, जिसकी वजह से पाठक को कथा के साथ बांधे रखती है । लेखक की भाषा कथा वस्तु के अनुरूप ही सहज, सरल और स्वाभाविक है । जहाँ पर इस्लामिक बातें आती हैं वहाँ भाषा थोड़ी कठिन प्रतीत होती है । आपका बंटी उपन्यास का शिल्प सहज और सपाट है । उसमें विश्लेष्ण और संवाद दोनों माध्यमों से कथानक का विकास हुआ है । लेखिका ने एकालाप शैली का प्रयोग अधिक किया है, जिसमें बंटी अपनी मनोग्रंथियों के भीतर आंतरिक जीवन से गुजरता है । बहुत सारी भावनाएं, प्रतिक्रियाएँ, और घटनाएँ उसके अवचेतन में घटित होती रहती है । दोनों ही उपन्यासों में कथानक संयोजन, पात्र–रचना और शिल्प गठन का उपन्यासकारों ने यथार्थवादी दृष्टि का प्रयोग किया है । अंतत: कह सकते हैं कि पाठक को उपन्यासों ने अंत तक बांधे रखा है और पाठक वर्ग आंतरिक रूप से झकजोर देता है ।

संदर्भ

1. मोहसिन खान, अल्लाह मियाँ का कारखाना, पृ. सं. 197
2. मन्नू भंडारी, आपका बंटी, पृ. सं. भूमिका से
3. मोहसिन खान, अल्लाह मियाँ का कारखाना, पृ. सं. 23
4. मन्नू भंडारी, आपका बंटी, पृ. सं. 50
5. मोहसिन खान, अल्लाह मियाँ का कारखाना, पृ. सं. 88